# बाइबल बेजोड़ है तथा इसका अध्ययन कैसे करें

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

**बेजोड़** – एकमात्र ; अकेला ; जो दूसरों से भिन्न हो ; जिसके तुल्य कोई नहीं हो।

1. निरन्तरता में बेजोड़

क) 1500 वर्षों की अवधि में लिखी गई।
ख) जीवन हर व्यवसाय से 40 से भी अधिक लेखकों द्वारा लिखी गई छियासठ पुस्तकें जिसमें राजा, किसान, दार्शनिक, मछुआरे, कवि, राज दरबारी, विद्वान शामिल हैं।
ग) इब्रानी, अरामी तथा युनानी भाषाओं में लिखी गई।
घ) उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक के विषयों में सैंकड़ों विवादास्पद विषय बड़े ही समन्वय और निरन्तरता के साथ सम्मिलित है।
ङ) 2 पतरस 1:21 – इस पुस्तक में एकत्व या एकता है और इसलिए आश्चर्यजनक है। भिन्न पृष्ठभूमी से आए चालीस से भी अधिक लेखक जिन्होने इतने सारे विषयों , तकरीबन 1500 वर्षों से अधिक की अवधि के दौरान लिखा, वह भी पूर्ण समन्वय में, जो असम्भव कार्य है। अतः हम बाइबल का स्पष्टीकरण किस प्रकार दे सकते हैं? इसका एकमात्र पर्याप्त स्पष्टीकरण "भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"

2. अपने वितरण में बेजोड़

किसी अन्य पुस्तक की तुलना में बाइबल ज़्यादा भाषाओं में प्रकाशित तथा ज़्यादा लागों के द्वारा पढी जाती है।समूची बाइबल और इसके भागों का इतिहास की किसी अन्य पुस्तक की तुलना में अधिक प्रतियों का प्रकाशन है।

3. अनुवाद में बेजोड़

किसी अन्य पुस्तक की तुलना में बाइबल का अनुवाद, पुनःअनुवाद और भावानुवाद सबसे अधिक बार हुआ है।

4. बने रहने में बेजोड़

क) समय में से – अन्य प्राचीन लेखों की तुलना में बाइबल के इतने हस्तलेख प्रमाण हैं जितने किसी दस प्राचीन उच्च सहित्यों को मिला कर हैं।

ख) सताव में से – बाइबल ने अपने शत्रुओं के ऐसे दुष्प्रहारों का सामना किया है जैसा किसी अन्य पुस्तक ने नहीं किया। रोमी साम्राज्य से वर्त्तमान साम्यवादी देशों तक के बहुत से लोगों ने इस पर प्रतिबन्ध लगा कर या गैरकानुनी करार दे कर या जला कर नष्ट कर देना चाहा।

ग) आलोचनाओं में से – किसी अन्य पुस्तक को इतना तोड़ा, काटा, जांचा, विश्लेषण तथा अपवाद नहीं किया गया जितना बाइबल को।

## 5. अपनी शिक्षाओं में बेजोड़

क) भविष्यवाणी – इस्लाम, मुहम्मद के जन्म की किसी भविष्यवाणी की ओर संकेत नहीं कर सकता जो उसके जन्म से सैंकड़ों वर्ष पहले की गई हो। और न ही किसी अन्य पन्थ का कोई संस्थापक अपने अस्तित्व की पहचान किसी प्राचीन ग्रन्थ से कर सकते हैं।

ख) इतिहास – यह प्राचीन साहित्य की श्रेणी में बिना किसी समानान्तर के अकेली खड़ी है।

ग) व्यक्तित्व – बाइबल अपने चरित्रों के पापों के साथ बहुत स्पष्टता से व्यवहार करती है, जबकि दूसरी जीवनियां अपने लोगों की बुराई छिपाने, ढांपने या नज़रअंदाज़ करने का प्रयास करती है।

घ) मनुष्य चाहते हुए भी बाइबल नहीं लिख सकता, परन्तु यदि वह कर पाता तो भी वह नहीं करता।

## 6. उपसंहार

बाइबल वास्तव में बेजोड़ हैं। समस्त साहित्यों में कोई पुस्तक इसके समान नहीं है। इन सब परिगुणों की पुस्तक को सत्य का खोजी मनुष्य अवश्य चाहेगा।
बाइबल बाकि समस्त पुस्तकों की तुलना में बहुत ऊंची है, जितना आकाश पृथ्वी से ऊंचा है। किसी ने बाइबल के विषय में ऐसा कहा है ''ज्ञानवान होने के लिए इसे पढ़ो, बचने के लिए इसपर विश्वास करो, धार्मिक होने के लिए इसका पालन करो।

## 7. बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। 2 तीमु 3:16

इस कथन की सच्चाई पर, सुसमाचारी मसीही खड़े हैं। ''प्रेरणा'' से अभिप्राय यह है कि पवित्र आत्मा ने अपने ईश्वरीय प्रभाव का प्रयोग बाइबल के लेखकों के उपर किया। लिखा गया प्रेरित था – अवश्यक नहीं कि लेखक भी, क्योंकि बाइबल कहीं भी यह दावा नहीं करती कि वह प्रेरित लेखकों द्वारा लिखी गई है। भजन संहिता 119:160 ; यूहन्ना 17:17

क) 2 पतरस 1:21 : पवित्र आत्मा, बाइबल का रचयिता है। यीशु मसीह ने अपने शिष्यो को बताया कि अभी वह बहुत सी बातें बिना प्रकट किए छोड़ रहे हैं, और पवित्र आत्मा आएगा तथा कुछ लोगों को चुनेगा और उनके द्वारा अपनी सिद्ध इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट करेगा। पवित्र आत्मा विश्वासी का शिक्षक होगा। यूहन्ना 16:12 – 15।।

ख) मनुष्य पवित्र आत्मा के द्वारा बाइबल लिखने के लिए इस्तेमाल में लाया गया साधन है। रोमियों 15:4 ; 1 कुरिन्थियों 10:11

ग) परिणाम यह है कि :त्रुटि रहित परमेश्वर का वचन। इस कारण बाइबल सभी त्रुटियों से मुक्त है तथा पूर्ण विश्वास योग्य है। भजन संहिता 12:6; 119:89; यशायाह 40:8; मत्ती 5:18; 24:35 ; 1 पतरस 1:23 – 25।

8. बाइबल कठिन पुस्तक है। 1 कुरिन्थियों 2:14– 16।

क्योंकि यह अनश्वर से नश्वर के पास, असीमित और सर्व सामर्थी परमेश्वर से सीमित मनुष्य के पास आई है। इसलिए आप बाइबल को ऐसे नहीं समझ सकते जैसे किसी महान विद्वान की रचना को। आप महान दार्शनिकों का अध्ययन कर अपनी स्वाभाविक बुद्धि से, और कठिन परिश्रम के द्वारा उसके गूढ़ अर्थ को प्राप्त कर सकते हैं। यदि बाइबल सहज मनुष्यों द्वारा समझी जा सकती तो यह एक सहज पुस्तक होती तथा परमेश्वर का वचन नहीं। इसलिए कि बाइबल परमेश्वर के द्वारा है, यह आत्मिक है, इससे पहिले आप इसकी शिक्षा को ग्रहण करें, आपका आत्मा के द्वारा जन्म लेना आवश्यक है ( यूहन्ना 3:6)। हमेशा बाइबल के निकट यह प्रार्थना करते हुए आएं कि पवित्र आत्मा आपका शिक्षक बनें तथा अपने पवित्र वचन की बेहतर समझ के लिए वह आपकी अगुवाई करे, नहीं तो यह एक कठिन पुस्तक बनी रह जाएगी। (यूहन्ना 16:12–15)।।

हम किस प्रकार बाइबल का सही अर्थ समझ सकते हैं?

- ★ परमेश्वर की सन्तान बन कर : यूहन्ना 3:3,5
- ★ पवित्र आत्मा से भर कर : इफिसियों 5:18 ; यूहन्ना 14:26, 15:26, 16:13
- ★ शिक्षणीय बन कर : इफिसियों 4:11– 16
- ★ शारीरिक नहीं परन्तु आत्मिक मनुष्य बन कर : 1 कुरिन्थियों 2:14–16
- ★ काम करने वाला बन कर : 2 तीमुथियुस 2:15

9. बाइबल में विशेष सामर्थ्य है

क) बाइबल के पास तलवार के समान अलग करने की सामर्थ्य हैं। यह मनुष्य को पाप से अलग कर देगा या पाप मनुष्य को बाइबल से अलग कर देगा। भजन संहिता 119:9–11 ; यशायाह 59:2 ; इब्रानियों 4:12 ; इफिसियों 6:17।।

ख) बाइबल के पास दर्पण के समान प्रतिबिम्ब करने की सामर्थ्य है। बाइबल में हम अपने को ऐसे देखते हैं जैसा परमेश्वर हमे देखता है। मसीह से पूर्व, पापियों के समान : रोमियों 3:23; 7:7 से आगे; गलातियों 3:22। मसीह के बाद, धर्मी के समान : 2 कुरिन्थियों 5:21 ।।

ग) बाइबल के पास पानी के समान शुद्ध या साफ करने की समर्थ्य है। दाऊद ने परमश्वर से यह प्रार्थना की ''अधर्म से मुझे पूर्णतः धो दे और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर''। इफिसियों 5:26; भजन संहिता 51:2 ,119:9 ; 1 यूहन्ना 1:9 ।।

घ) बाइबल के पास बीज के समान प्रजनक सामर्थ्य है। 1 पतरस 1:23 हम परमेश्वर की सन्तान हैं क्योंकि हमारा जन्म परमेश्वर के परिवार में परमेश्वर के अविनाशी बीज के द्वारा हुआ है। यह नया जन्म है। यूहन्ना 3:1–7 ; लूका 8:11–15 (उदाहरण : श्री लंका का राजा – ''मेरे पास आओ'')

ङ) बाइबल के पास भोजन के समान पोषण करने की सामर्थ्य है। 1 पतरस 2:2 बाइबल हमारे प्राणों के लिए आत्मिक भोजन है। कोई भी मसीही, प्रभु में बलवान नहीं रह सकता जब तक वह परमेश्वर के वचन का अध्ययन न करे। अय्यूब 23:12 ; रोमियों 15:4 ।।

च) बाइबल के पास उन लागों को आशिष व सफलता देने की सामर्थ्य है जो इसका अध्ययन करते और इसकी आज्ञाओं को मानते हैं।

10. बाइबल विश्वासी को आज्ञा देती है कि वह पवित्र शास्त्र का अध्ययन करे। 2 तीमुथियुस 2:15

प्रेरितों के काम 17:11 जब आप बाइबल का अध्ययन करेंगे, तब आप यह जान जाएंगे कि बाइबल **ही** परमेश्वर का वचन है। आप यह भी दिमाग में रखें कि परमेश्वर के वचन में दुसरों के ''शब्द'' भी हैं। जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं तो अपने आप से यह प्रशन पूछें :

क) कौन बात कर रहा है : परमेश्वर : स्वर्गदूत, मनुष्य या शैतान ?

ख) किससे बोला गया : इस्राएल, अन्य जातियों, मनुष्यों या मनुष्य से ?

ग) कैसे मैं इस पवित्र शस्त्र को अपने स्वयं के जीवन में प्रयुक्त कर सकता हूं ?

जब आप परमेश्वर का वचन का अध्ययन करेंगे तब आप परमेश्वर के वचन से प्रेम करने लगेंगे।

क) दाऊद

- भजन संहिता 119: 9– 16 तेरे वचन को मैंने अपने हृदय में संचित किया है, क तेरे विरुद्ध पाप न करुं।
- भजन संहिता 119: 33–44 इसे अपनी प्रार्थना बनाएं।
- भजन संहिता 119: 97–104 अहा, मैं तेरी व्यवस्था से कितनी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान इसी पर लगा रहता है।
- भजन संहिता 119: 127 इसलिए मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से, वरन् कुन्दन से भी बढ़कर प्रिय जानता हूं।
- भजन संहिता 119: 140 तेरा वचन पूर्णतः ताया हुआ है, इसलिए तेरा दास उस से प्रेम करता है।
- भजन संहिता 19:7–11 यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है, जो प्राण को पुनः नया कर देती है।

ख) अय्यूब

अय्यूब 23:12 मैं उसके होंठों की आज्ञा से हटा नहीं हूं ; मैंने उसके मुंह के वचनों को अपने दैनिक भोजन से भी अधिक बहुमूल्य जाना है।

ग) यिर्मयाह

- यिर्मयाह 15:16 तेरे वचन पाकर मैंने उन्हें खा लिया और तेरे वचन मेरे हृदय के लिए आनन्द और हर्ष के कारण बने हैं।

11. अपनी बाइबल का अध्ययन कैसे करें। एज्रा 7:10 हमारा नमूना

क) टिप्पणी – यह क्या कहता है ?
अभ्यास के लिए कुलुस्सियों 3 प्रयोग करें।

i) प्रार्थना से आरम्भ करें
ii) परिच्छेद को पढ़ें और फिर पढ़ें
जैसे आप प्रेम पत्र को पढ़ते हैं।
iii) लेखक के उद्देश्य का पता लगाएं

- अब तक लिए गए मुख्य विषय
- अब तक जिन समस्याओं का निवारण किया
- दिए गए उपदेश
- संकेतशब्द और वाक्यांश का दोहराया जाना
- पूछे गए प्रशन
- तुलना या विषमता
- कार्य कारण
- आज्ञाकारिता का परिणाम

iv) हमेशा प्रशन पूछें

- किसने लिखा ? किसने कहा, किसको कहा, किसके बारे में कहा ?
- प्रमुख घटनाऐं क्या हैं? मुख्य सिद्धान्त क्या हैं? उद्देश्य क्या है? वह क्या कह रहा है?
- ऐसा कब हुआ? कब होगा?
- ऐसा कहां हुआ? कहां होगा?
- ऐसा क्यों लिखा गया? क्यों हुआ?
- ऐसा कैसे हुआ? उसने ऐसा कैसे किया?

v) ढूंढें तथा सूची बनाऐं ; परमेश्वर के

- गुणों की – मैं परमेश्वर के बारे में क्या सीख सकता हूं ?
- सिद्धान्तों की – क्या शिक्षाएं हैं ?
- प्रतिज्ञाओं की
- आज्ञाओं की
- चेतावनियों की
- नियमों की

vi) अपनी बाइबल में चिन्ह लगाना – रंगों का इस्तेमाल

- 🕮 सुनहरा — परमेश्वर की प्रतिज्ञाऐं
- 🕮 हरा — पवित्र आत्मा
- 🕮 बैंजनी — परमेश्वर का राज्य
- 🕮 पीला — महत्वपूर्ण पद या शब्द
- 🕮 नीला — मसीह का ईश्वरीयपन
- 🕮 लाल — लहू
- 🕮 हाशिया में पेंनसील का इस्तेमाल करें, संकेतशब्दों पर गोला लगाऐं, संदर्भ माला बनाऐं

vii) प्रत्येक अध्याय का शिर्षक और विषय का निर्धारण करें।
केन्द्रिय पद को चुनें

viii) पूरी पुस्तक का शिर्षक और विषय का निर्धारण करें।

ख) व्याख्या – इसका क्या अर्थ है।

i) अन्तर्दृष्टि

- 🕮 पवित्र शास्त्र कभी भी पवित्र शास्त्र का विरोध नहीं करेगा। वचन को अपनी व्याख्या करने दें। परिच्छेद को संदर्भ से बाहर न ले जाएं।
- 🕮 हमेशा पवित्र शास्त्र का अक्षरशः व्याख्या करें। उसके अर्थ को न बदलें।
- 🕮 क्या वहां ध्यान देने योग्य सांस्कृतिक, समाजिक, या धार्मिक रीति रिवाज़ हैं।

ii) कार्यप्रणाली

- 🕮 प्रशन पूछें। क्यों? इसका क्या अर्थ है?
- 🕮 आवश्यक शब्द अध्ययन करें।
- 🕮 निर्धारित करें कि मूल पाठकों के लिए इसका क्या अर्थ था। ऐतिहासिक सन्दर्भ।
- 🕮 दूसरे परिच्छेद को देखें जो उसका समर्थन, बढ़ावा या समझ देते हों।
- 🕮 यदि कोई दूसरा अनुवाद उपलब्ध है, तो उसे पढ़ें।
- 🕮 यदि सम्भव हो तो बाइबल टीका पढ़ें।
- 🕮 अपने निष्कर्ष का सारांश लिख लें।

ग) उपयोग – आज यह सच्चाई मेरे उपर किस प्रकार से लागू होती है। याकूब 1:22

i) 2 तीमुथियुस 3:16–17

- 🕮 शिक्षण : चेला बनना, सीखने वाला।
- 🕮 भर्त्सना : मेरे विचार और व्यवहार में क्या गलत है उसे प्रकट करना।
- 🕮 ठीक करना :जो गलत है उसे मान कर फिरना। मत्ती 5:23–24; 18:15।
- 🕮 धार्मिकता में प्रशिक्षण : किस प्रकार रहें ? 1 कुरिन्थियों 10:11; रोमियों 15:4।

ii) क्या इसमें

- 🕮 पाप या गलत कार्य है जिससे दूर रहना है।
- 🕮 आज्ञा है जिसे मानना है।
- 🕮 मेरे लिए प्रतिज्ञा है।
- 🕮 उदाहरण है जिससे सीखा जा सके।

III) प्रत्येक वर्ष अपनी बाइबल पूरी पढ़ लें।

- 🕮 प्रत्येक दिन तीन अध्याय पढ़ें।
- 🕮 रविवार पांच अध्याय पढ़ें।

## 12. बाइबलीय मनन – यहोशू 1:8 ; भजन संहिता 1

बाइबल अध्ययन : ज्ञान के लिए। प्रथम लक्ष्य परिच्छेद को समझना, विश्लेषण करना है। दूसरे परिच्छेदों से तुलना करें, शास्त्र के साथ शास्त्र। बाइबल टीका व अन्य सहायक सामग्री का इस्तेमाल करें।

बाइबल पर मनन : वचन के पास बालक के समान आएं तथा परमेश्वर से निवेदन करें कि वह आपकी आत्मा को भोजन दे और पथ – प्रदर्शन करे। इसे पढ़ें और प्रतिक्षा करें कि परमेश्वर आपसे बात करे। उस परिच्छेद के सामने अपने पूर्ण जीवन को खोल दें। जैसी आवश्यकता होगी वह आपको प्रोत्साहन देगा, अगुवाई करेगा, निर्देश देगा, या डांटेगा। आप परमेश्वर से मिलने और उससे सुनने के बाद ही कहीं जाएं। आप अपने दैनिक कार्य में इसकी आज्ञा का पालन करें तथा इस्तेमाल में लाऐं। भजन संहिता 119:147–148; 97–99।।

मनन की शक्ति, अच्छे के लिए और बुरे के लिए। फिलिप्पियों 4:8

1. यह हमारे विचार–शक्ति के जीवन का पुनःनिर्माण करता है।
2. यह हमारी इच्छा–शक्ति को पुनःसुयोजित करता है।
3. यह हमारी भावनाओं को पुनःकेन्द्रित करता है।

अपना दिन आरम्भ करने से पहले, यीशु को प्रति भोर एक विशेष समय देने का उद्देश्य। भजन संहिता 119:147; नीतिवचन 8:32–36।।

क) अपने को शून्य कर दें।
- i) अपने हर विचारों को बन्दी बना लें
- ii) परिच्छेद की आपकी पूर्व समझ आपको कुछ नया पाने से रोकने न पाये।
- iii) जो आप सुनना चाहते हैं उससे वो बुलवाने का प्रयास न करें।

ख) कोई पाप है तो उसे मान लें तथा त्याग दें। भजन संहिता 139:23–24 "हे परमेश्वर, मुझे जांचकर मेरे हृदय को जान ले"

ग) सबसे मेल कर लें। मत्ती 5:23–24

घ) पवित्र आत्मा से भर जाएं, इफिसियों 5:18। वह रचयिता है – महान शिक्षक है, यूहन्ना 14:26।

ङ) इस विश्वास के साथ आएं कि वह आपसे बात करेगा। "हमारे पिता ..." इब्रानियों 12:25; यशायाह 50:4; 51:1,4,7; 55:2–3; हबक्कूक 2:1; इब्रानियों 11:6; रोमियों 10:17

च) आज्ञा मानने के लिए वचनबद्ध – प्रभुत्व। लूका 6:46; मत्ती 7:21 । कहें "प्रभु, अपने सेवक से कहें, मैं आपकी आज्ञा को मानूंगा चाहे उसके लिए मुझे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।"

छ) परिच्छेद चुनें
- i) महत्वपूर्ण सझाव यह है कि आप एक पुस्तक ले लें और उस पर आरम्भ से अन्त तक मनन करें।
- ii) दिन प्रतिदिन क्रमबद्ध रीति से चलें। अत्यन्त महत्वपूर्ण।
- iii) पवित्र आत्मा से पूछें, कहां से आरम्भ करें। यदि वह आप को कोई विशेष सीख देने के लिए किसी और पुस्तक की ओर ले जाए तो उस सीख को प्राप्त कर लें और फिर वापस अपने उसी परिच्छेद पर आ जाएं।

ज) बाइबल अध्ययन सामग्री
- i) भक्तिमय किताबें अच्छी हैं परन्तु इनका इस्तेमाल प्रातः काल मनन के लिए नहीं करना चहिए। उसकी वाणी सुनना सीखें, जो विशेष रुप से और मूलतः आपकी है।
- iii) इसी कारण से बाइबल टीका का इस्तेमाल न करें। इसे आप को अपना निज बाइबल टीका बनने दें। चाहे वह इतना विद्वत्तापूर्ण न हो परन्तु यह आपका अपना होगा।

झ) बाइबल का वह अनुवाद प्रयोग करें जो समझ सकने में असान हो।

## 13. चरित्र अध्ययन कैसे करें

बाइबल में हमें पुरुषों और महिलाओं के जीवन का सत्य ब्यौरा मिलता है जिसके द्वारा हम उनसे सीख सकते हैं, यह जान सकते हैं कि विफलताऐं अन्त नहीं हैं और यहां तक कि बलवानों में भी कमज़ोरी होती है।

क) प्रक्रिया

i) यह निर्णय लें कि किस विशेष व्यक्ति के जीवन का आप अध्ययन करना चाहते हैं।

ii) उस से सम्बन्धित पदों या परिच्छेदों की सूची बना लें। यदि उपलब्ध हो तो शब्दानुक्रमणिका का इस्तेमाल करें।

iii) परिच्छेदों को पढ़ें और महत्वपूर्ण बातों को लिख लें।

iv) देखें

- नाम का अर्थ (मूसा – पानी में से निकाला)
- परिवार का इतिहास
- प्रशिक्षण और परिवर्तन
- समय जिसमें वह रहा और उसके जीवन के काल।
- सफलताऐं और असफलताऐं
- आत्मिक जीवन, फिलिप्पियों 3:17; 4:9
- आत्मिक नियमों का वर्णन करने के लिए पवित्र शास्त्र के भाग।
- उसके जीवन का दूसरों पर प्रभाव, फिलिप्पियों 3:7 से आगे।
- उसकी मृत्यु, 2 तीमुथियुस 4:7–8

ख) स्तिफनुस का उदाहरण (इसे करें)

i) पदों या परिच्छेदों की सूची बना लें : प्रेरितों के काम 6:3 – 8:2; 11:19; 22:20।

ii) उसके नाम का अर्थ : ताज, मुकुट या विजेता की माला।

iii) व्यक्तिगत प्रयोग : क्या मै अपने आपको देखता हूं? निर्बलताएं? बल?

## 14. विषयात्मक अध्ययन कैसे करें

क) उद्देश्य

यह ज्ञात करना कि परमेश्वर का वचन किसी विशेष विषय पर क्या कहता है। यह उस विषय का पूर्ण चित्र देता है।

ख) प्रक्रिया

i) जिस विषय का आप अध्ययन करें उसके प्रत्येक समान्तर और सम्बन्धित परिच्छेदों को ढूंढें। प्रत्येक संदर्भ को उसकी परिस्थिति के अन्तर्गत समझा और जांचा जाना चहिए।

- शब्दानुक्रमणिका वाली बाइबल, प्रासंगिक बाइबल आदि का प्रयोग करें।
- सारे सम्बन्धित शब्दों को ढूंढें। जैसे प्रार्थना, मध्यस्थता।
- बाइबल में जहां उस विषय का सर्वप्रथम उल्लेख है उस परिच्छेद को ढूंढें। अच्छे से पढ़ें।
- वैषम्य दिखाने वाले परिच्छेदों को ढूंढें।

ii) अपने आंकड़ों को एकत्र करें

- प्रत्येक परिच्छेद का अच्छे से अध्ययन करें, लेखक का अभिप्राय जानने की खोज करें।

- 🕮 सन्दर्भ ध्यानपूर्वक देखें।
- 🕮 परिच्छेद के मुख्य सत्य का ज्ञात करें।
- 🕮 अपने अवलोकन तथा नई जानकारी को लिख लें।
- 🕮 उन परिच्छेदों को लिख लें जो स्पष्ट व अस्पष्ट हैं। जो धुंधला है उस पर अपने सिद्धान्तों का निर्माण न करें।
- 🕮 इस बात को नोट कर लें कि कितनी बार किसी विशेष शिक्षा को दोहराया गया है या ज़्यादा महत्व दिया गया है।
- 🕮 कभी भी अनुमान, परम्परा या गैर बाइबलीय स्रोतों पर निर्माण न करें।

ग) सामग्री को रुपरेखा बना कर सुव्यवस्थित कर लें।
- 🕮 यह निश्चित कर लें कि आप के पास विषय का पूरा विवरण है और वह सुसंगत है।
- 🕮 यह निश्चित कर लें कि आप वहां ज़ोर दे रहे हैं जहां परमेश्वर ज़ोर देता है।

घ) लागू करना : यह विचार करें कि आपने जो कुछ सीखा है वह आपके जीवन को किस प्रकार से प्रभावित करता है।

## 15. दृष्टान्त – एक कहानी जो नैतिक पाठ व सत्य सीखाती है।

आमतौर पर यह वास्तविक घटना नहीं होती परन्तु जीवन का सत्य उसमें बना रहता है। इसको एक प्रमुख विषय के लिए बनाया जाता है। हर बात का आत्मिक अर्थ लगाना और प्रासंगिक करना सही नहीं है।

क) दो उद्देश्य :
- i) प्रकट करना, स्पष्टता देना, या कायल किए जाने में सत्य पर बल।
- ii) जिन्होंने इसे अस्वीकृत कर दिया उनसे इस सत्य को छिपाना।

ख) दृष्टान्त के सही अर्थ के लिए आपको चाहिए :
- i) यह जानें कि क्या कहा गया तथा किस से प्रेरित हुआ।
- ii) दृष्टान्त के अभिप्राय की खोज करें।
  - 🕮 कभी कहा जाएगा।
  - 🕮 यदि नहीं कहा जाएगा तो उसके प्रयोग किए जाने से पहचान लिया जाएगा।
  - 🕮 जो अर्थ स्पष्ट रीति से दिया गया है या जो लेखक के श्रोताओं पर लागु होता है, उससे आगे इसका अर्थ लगाना नहीं चहिए।
  - 🕮 एक प्रमुख विषय या दिए गए ज़ोर को पहचानें।
- iii) सम्बद्ध विवरणों की पहचान करें। यह हमेशा प्रमुख विषय को प्रबलित करेगा। उदाहरणतः यीशु , मरकुस 4:13 ।।
- iv) असम्बद्ध विवरणों की पहचान करें। दृष्टान्त में सारे विवरणों का महत्व नहीं है तथा जो प्रमुख विषय से संगत नहीं है उसका अर्थ लगाना गलत है। जैसे – उड़ाऊ पुत्र का प्रायः गलत इस्तेमाल

किया जाता है। यह फरीसियों को दिखाने के लिए था कि पापीयों को माफ़ करने वाला परमेश्वर पिता का हृदय बनाम कुड़ कुडाने वाला बड़ा भाई। लूका 15:2।।

सांस्कृतिक विषयों वाले दृष्टान्तों को बाइबलीय सांस्कृति के प्रकाश में समझा जाना चाहिए न कि अपनी सांस्कृति में। जैसे : बुद्धिमान और मूर्ख कुंवारियां। मत्ती 25:1–13।

दृष्टान्त को कभी भी किसी सिद्धान्त का प्रमुख आधार नहीं बनाना चाहिए।

### 16. रुपक कथा

यह एक कहानी है जिसका अर्थ छपा हुआ होता है, जो कहानी के मूल अर्थ से भिन्न होता है।

उदाहरणतः यूहन्ना 10 तथा 15।

- क) इसमें एक से अधिक बल देने हेतु प्रमुख बिन्दु हो सकते हैं।
- ख) यह बहुत सी सच्चाईयों सीखा सकता है।
- ग) रुपक कथा का ब्योरा अनेक व भिन्न प्रकार के विषयों से सम्बन्धित हो सकता है।
- घ) इसमें असंगत विवरण हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि रुपक कथा की हर आकृति को जाना जाए। कहानी और अर्थ को गूंथ लें।
- ङ) प्रयोग करना रुपक कथा में ही मिल जाएगा।

## प्रयोग हेतु परिशिष्ट

कुलुस्सियों 3

प्रत्येक छात्र इस अध्याय से एक पद को ले और इन प्रशनों का उत्तर दें:

1. मैने परमेश्वर के बारे में क्या सीखा? (गुण)
2. मैनें अपने बारे में क्या सीखा? (सिद्धान्त, शिक्षाऐं)
3. क्या कोई प्रतिज्ञा है? (प्रतिज्ञाऐं)
4. क्या कोई आज्ञा है? (आज्ञा)
5. क्या कोई चेतावनी है? (चेतावनियां)

कक्षा के समय में केवल यह पांच ही करें।

कम से कम चार पदों पर एक साथ मिलकर काम करें, शिक्षक प्रशन पूछें ताकि वे समझ सकें कि कैसे करना है। उन्हें अध्याय अपने आप से समाप्त करने दें। (वे ऐसा कर के सीखेंगे)

उन्हें करीब 45 से एक घंटे का समय दें। फिर उन्हें बताने दें कि उन्होंने कक्षा में इस पाठ के द्वारा क्या सीखा और फिर बाकि बचे प्रत्येक पदों के उत्तर भी उन्हें देने दें।

वे इस अभ्यास का आनन्द उठायेंगे। उनके पास इस प्रश्नपत्र को समाप्त करने का प्रयाप्त समय नहीं होगा

परन्तु वे कक्षा में आपके साथ इसको समाप्त कर देंगे।

इस बात पर ज़ोर दें कि वे घर समूह बाइबल अध्ययन, या व्यक्तिगत अध्ययन, या कक्षा के अध्ययन में भी इन प्रशनों को पूछते हुए अगुवाई करें। जो कुछ वे इन पांच प्रशनों को पूछ कर सीखेंगे उसे देख कर हैरानी होगी।

इस अभ्यास को करने के बाद बाकि के नोटस् के साथ आगे बढ़ें।

## 17. ग्रंथ – सूची

पाटर बारिंगटन कृत *Master Outlines* जो Christian Life New Testament में मिलता है, प्रकाशक थोमस नेलसन : नैशविल्ल, टेन्नेसी 37202।

*How to Study Your Bible Precept Upon Precept :* से लिया गया